C-5 U-1 d

Q. Describe the basic premises and philosophy of subject.

विषयों के बुनियादी आधारभूत परिसर और दर्शन का वर्णन करें।

Ans बालक की शिक्षा व्यवस्था समाज के द्वारा ही होती है। अतः अध्ययन विषय का समाज एवं व्यक्ति की प्रकृति से संबंधित होना स्वाभाविक है और प्रत्येक समाज विद्यालयों से भी यह अपेक्षा रखता है कि उनकी संस्कृति व सभ्यता का हस्तान्तरण अगली पीढ़ी में हो, इसलिए अध्ययन विषय विकास की प्रक्रिया में समाज, व्यक्ति तथा सांस्कृतिक विरासत पर जोर देना आवश्यक होता है क्योंकि ये तीनों एक-दूसरे से जुड़े हुये है, और दर्शन अध्ययन विषयों का मेरुदण्ड है। अध्ययन विषयों का नियोजन देश की सामाजिक, दार्शनिक, राजनैतिक विचारधाराओं पर आधारित होता है। देश और काल के अंतराल में जिन विचारधाराओं का अभ्युदय हुआ वे निम्न है:-

(i) आदर्शवाद (Idealism)

(ii) प्रकृतिवाद (Naturalism)
(iii) प्रयोजनवाद (Pragmatism)
(iv) यथार्थवाद (Realism)
(v) अस्तित्ववाद (Existentialism)

(i) आदर्शवाद तथा अध्ययन विषय (Idealism and Disciplines):- आदर्शवाद, मानवीय विचारों, सत्य, मूल्य, आदर्श को अध्ययन विषयों का आधार मानते हैं। ये शिक्षा द्वारा व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करना चाहते हैं। इनके अनुसार मन और पदार्थ भिन्न है। मन पर नैतिकता एवं आदर्शों का प्रभाव पड़ता है पदार्थ पर नहीं। इस दर्शन के अनुसार जो अंतिम सत्य है वही शिव है वही वास्तव में सुंदर है।

आदर्शवादी अध्ययन विषयों में आध्यात्मिक विकास के लिए कला, साहित्य, दर्शन, धर्म, नीतिशास्त्र, इतिहास तथा प्राकृतिक वातावरण की जानकारी के लिए भौतिकी, रसायन, जन्तु विज्ञान, गणित, आदि विषयों को स्थान दिया गया है।

(ii) प्रकृतिवाद तथा अध्ययन विषय (Naturalism and Disciplines):- प्रकृतिवादी प्रत्यक्ष ज्ञान का समर्थन करते हैं वे इन्द्रियों तथा अनुभव के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति पर बल देते हैं। वे इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान

को ही सत्य मानते हैं। इनके अनुसार मनुष्य इन्द्रियों एवं विभिन्न शक्तियों का समन्वित रूप है। प्रकृतिवाद के अनुसार अध्ययन विषयों का निर्माण बालक की रुचियों, योग्यताओं और स्वाभाविक क्रियाओं के अनुसार होना चाहिए।

(iii) प्रयोजनवाद तथा अध्ययन विषय (Pragmatism and Discipline) :- प्रयोजनवाद का विश्वास है कि वास्तविकता या अंतिम सत्ता एक स्थिर प्रवाह है। विश्व सतत परिवर्तन की दशा है। यह एक प्रक्रिया है। यह सदैव परिवर्तित होने वाले जल के समान है। अतः इसकी प्रत्येक वस्तु गतिशील एवं प्रवाहयुक्त है। इसमें भौतिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, संस्थागत संगठनों तथा मानव के दृष्टिकोणों में दिन प्रतिदिन परिवर्तन होता रहता है। इनके अनुसार अध्ययन विषय ऐसे होने चाहिए कि जो बालक को उसके वर्तमान और भावी जीवन के लिए तैयार करें। अतः अध्ययन विषयों में भाषा, स्वास्थ्य विज्ञान, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान और शारीरिक प्रशिक्षण न कुछ रखा जाना चाहिए।

(iv) यथार्थवाद तथा अध्ययन विषय (Realism and Disciplines):- यथार्थवाद वस्तु के अस्तित्व संबंधी विचारों के प्रति एक दृष्टिकोण है। जो प्रत्यक्ष जगत को सत्य मानता है। यह भौतिकवाद पर आधारित है। ये विचारों एवं सिद्धान्तों की अपेक्षा वस्तुओं और घटनाओं की वास्तविकता पर बल देते है।

(v) अस्तित्ववाद तथा अध्ययन विषय (Existentialism and Disciplines):- इसके अनुसार मनुष्य ही अस्तित्व रखता है क्योंकि मनुष्य में चेतना है, संसार के अन्य प्राणी चेतना विहीन होने के कारण अस्तित्व नहीं रखते। मानव केवल इसके लिए कि वह क्या अपने को बनाता है और कुछ नहीं है। इनके अनुसार अध्ययन विषयों में किसी एक विषय से काम नहीं चलता। छात्र को अनेक प्रकार की परिस्थितियों के अनुकूल बनाने के लिए अनेक विषयों का अध्ययन करना आवश्यक है।